UP Board Class 7 History Notes Chapter 5 सल्तनत का विघटन

तैमूर का आक्रमण

1398 ईस्वी है। तैमूर लंग ने हिंदू राजाओं और शासकों को नष्ट करने के उद्देश्य से 1398 में भारत पर आक्रमण किया। तैमूर को लगा कि दिल्ली के मुस्लिम सुल्तान अपने हिंदू अधीनस्थों के प्रति बहुत सहिष्णुता दिखा रहे हैं। सिंध नदी को पार करने के बाद उसने समरकंद से अपनी यात्रा शुरू की और पंजाब में प्रवेश किया।

सैय्यद वंश (1414 – 1451 ई.)

तैमूर के आक्रमण ने सल्तनत की शक्ति को कम कर दिया और खिज्र खां ने सैय्यद वंश की नीवं डाली | जब खिज्र खां ने दिल्ली पर अधिकार किया | तब उसकी स्थिति काफी कमज़ोर थी |
इसलिए उसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की | वह रैयत-ए-आला की उपाधि से ही संतुष्ट रहा | ख़िज्र खान की मृत्यु के बाद 20 मई 1421 को उनके पुत्र मुबारक खान ने सत्ता अपने हाथ में ली और अपने आप को अपने सिक्कों में मुइज़्ज़ुद्दीन मुबारक शाह के रूप में लिखवाया।

लोदी वंश (1451 ई0-1526 ई0)

लोदी वंश एक अफगान राजवंश था जिसने 1451 से 1526 ईस्वी तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया था। यह दिल्ली सल्तनत का पांचवां और अंतिम राजवंश था, जिसकी स्थापना बहलोल खान लोदी ने की थी, जब उन्होंने सैय्यद वंश का स्थान लिया था। लोदी राजवंश जिसे कभी-कभी "प्रथम भारत-अफगान साम्राज्य" भी कहा जाता है।

बहलोल लोदी(1451-1489 ई)

दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत पहला अफगान वंश बहलोल लोदी ने स्थापित किया
लोदी शासक अफगान जाति के थे जिन्हे पठान भी कहा जाता था
प्रथम अफगान राज्य की स्थापना (मध्यकालीन भारत में) लोदीयों ने ही की थी
लोदी वंश का संस्थापक बहलोल लोदी था इसका शासन काल 1451-1489 तक रहा
दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला यह पहला अफगान शासक था
इसने जौनपुर के शासक हुसैन शाह को परास्त कर उसे पुन: दिल्ली सल्तनत मे मिला लिया
बहलोल लोदी सुल्तान बनने से पहले सरहिंद का सूबेदार था
इसने एक बहलोली सिक्का चलाया.

सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.)

बहलोल लोदी के उपरांत सिकंदर लोदी दिल्ली का सुल्तान बना, जो लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक सिद्ध हुआ सिकंदर लोदी ने 1504 ई. में आगरा नगर की स्थापना की तथा 1506 ई. में इसे अपनी राजधानी बनाया। उसने नाप के लिए एक पैमाना 'गज-ए-सिकंदरी' प्रारंभ किया तथा हिन्दुओं पर जजिया कर आरोपित किया।
सिकन्दर लोदी ने मुहर्रम और ताजिया निकालना बंद करा दिया। मस्जिदों को सरकारी संस्थाओं का रूप प्रदान

करके उन्हें शिक्षा का केंद्र बनाने का प्रयत्न किया।
सिकंदर लोदी के अनुसार, “यदि मैं अपने एक गुलाम को भी पालकी में बैठा दूं तो मेरे आदेश पर मेरे सभी सरदार उसे अपने कन्धों पर बैठा कर ले जायेंगे।“
सिकंदर लोदी ने एक आयुर्वेदिक ग्रंथ का फारसी में अनुवाद करवाया, जिसका नाम ‘फरहंग-ए-सिकंदरी’ रखा गया। सिकंदर लोदी गुलरूखी के उपनाम से फारसी में कविताएं लिखता था।

इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.)

इब्राहिम लोदी सिकंदर लोदी के सबसे छोटे पुत्र बने। सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद, इब्राहिम लोदी 1517 ईस्वी में गद्दी पर बैठा और 1526 ईस्वी तक दिल्ली सल्तनत पर हावी रहा। वह लोदी वंश के शेष राजा और दिल्ली सल्तनत के अंतिम सुल्तान में बदल गया।

वह एक साहसी राजा बना, उसके शासनकाल में कई विद्रोह हुए। जौनपुर और अवध में दरिया खान ने उत्थान का नेतृत्व किया। दौलत खान ने पंजाब में विद्रोह कर दिया। 1518 ई. में राणा सांगा के हाथों खतौली के युद्ध को पराजित करना पड़ा। उनके जमींदार और चाचा आलम खान काबुल भाग गए और बाबर को भारत पर हमला करने के लिए आमंत्रित किया। पानीपत की पहली लड़ाई 21 अप्रैल 1526 को बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच हुई और लोदी उसमें हार गए 21 अप्रैल 1526 को पानीपत की पहली लड़ाई के अंदर बाबर ने इसे हराकर मार डाला और आगरा और दिल्ली के सिंहासन पर कब्जा कर लिया। 1526 में पानीपत की लड़ाई के बाद, बाबर ने मुगल वंश की प्रेरणा रखी, जिसने लगभग 500 वर्षों तक भारत पर शासन किया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया।

दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण-

जनता के समर्थन की कमी,
व्यक्तिगत अत्याचार,
कुलीन शक्ति और साज़िश,
प्रांतीय शासकों का विद्रोह,
फिरोज के वारिसों की कमजोरी और अक्षमता
और अंत में मंगोल और अन्य आक्रमणों से इस साम्राज्य का पतन तेज हो गया।

https://www.evidyarthi.in/